मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां, वन्दे तद्गुणलब्धये॥

तत्त्वार्थ-सूत्र ग्रंथराज में तृतीय अध्याय के सूत्रों का विवेचन चल रहा है। जम्बूद्वीप-लवण समुद्र आदि द्वीप-समुद्रों के बारे में, मध्यलोक के बारे में और उस मध्यलोक के बीचों-बीच में विराजमान जम्बूद्वीप के विषय में चर्चा हुई है। जम्बूद्वीप के अन्दर जो भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत, ये सात क्षेत्र हैं, इन सात क्षेत्रों का विभाजन करने वाले छह पर्वत हैं, जिनके नाम हिमवन, महाहिमवन, निषध, नील, रुक्मि और शिखरणी, ये छह पर्वत बताए गए हैं। इस विषय में कल आप लोगों से कुछ विचार हुआ था और भरतक्षेत्र और जम्बूद्वीप के बारे में थोड़ी-सी जानकारी आपको दी भी गई थी। बहुत से श्रोताओं को ऐसा लग रहा था जैसे मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है। बाद में पता पड़ा, श्रोताओं के कुछ भाव आए, उसी को ध्यान में रखते हुए, आपको यहाँ पर उन क्षेत्रों और पर्वतों के विषय में एक स्पष्ट जानकारी हो जाए, इसलिए आपको यहाँ map के माध्यम से दिखाया जा रहा है तो यहीं से शुरुआत करते हैं।

Class 13

जम्बूद्वीप में बने हुए जिनायतनों का दिशा निर्धारण

यह आपको जो दिख रहा है- गोल⭕, यह जम्बूद्वीप है, अभी केवल इस पर ही focus करें। यह एक बड़ा जम्बूद्वीप है। जिसमें कल आपसे कहा जा रहा था कि इस जम्बूद्वीप की हम दो दिशाएँ निर्धारित कर रहे हैं। एक नीचे की ओर और एक ऊपर की ओर। जब भी हम जम्बूद्वीप या जम्बूद्वीप के अन्दर कोई भी विदेह आदि क्षेत्र या किसी भी तरह के जहाँ कहीं पर भी जिनायतन इत्यादि बने हुए हैं, उनकी दिशा का निर्धारण इसी तरह से रहता है-

- नीचे⬇️ की ओर यह दक्षिण दिशा है।
- ऊपर⬆️ की ओर यह उत्तर है।
- उधर➡️ पूर्व हो जाएगी और
- इधर⬅️ की तरफ पश्चिम हो जाएगी।

जम्बूद्वीप के नक्शे में भरत आदि सात क्षेत्र और हिमवन आदि छह कुलाचल पर्वतों का वर्णन

इसी दिशा-दिशा क्रम से हम जब नीचे की ओर देखते हैं-

सबसे नीचे जो आपसे चर्चा कर रहा था कि यह भरत क्षेत्र है। जितना यह धनुषाकार का नीचे का स्थान दिखाई दे रहा है यह क्या है? यह भरत क्षेत्र है और इस भरत क्षेत्र को विभाजित करने वाला यह जो बीच में line पड़ी है इसी को आप एक पर्वत समझ ले, यह हिमवन पर्वत हो गया। यह पहला हिमवन पर्वत है। दूसरा फिर इस हिमवन पर्वत के बाद में दूसरा क्षेत्र आ जाता है- हैमवत क्षेत्र। इस हैमवत क्षेत्र के आगे का

जो पर्वत है, वह हो जाएगा महाहिमवान पर्वत। यह दूसरे number का यह पर्वत समझ ले, एक line एक बड़ा पर्वत है। फिर इसके बाद में भरत, हैमवत, यह हरि समझ ले। इसको क्या समझ ले? हरि क्षेत्र और इसको भी विभाजित करने वाला यह जो पर्वत है, यह निषध पर्वत है। यह बीच का जो बहुत सारा portion छोड़ा हुआ है, यह आपको अभी बताया जाएगा कि इसी में बीचों-बीच में सुमेरू पर्वत और उसी में विदेह आदि क्षेत्र हैं, जो अभी थोड़ा-सा बताने की कोशिश करेंगे। यह निषध पर्वत हो गया, यह पूरा फिर विदेह क्षेत्र हो गया। इस विदेह क्षेत्र के बाद में फिर यह line आई। यह नील पर्वत हो गया।
फिर उसके बाद में रम्यक, विदेह के बाद में क्षेत्र आएगा रम्यक क्षेत्र! फिर उसके बाद में यह जो पर्वत आया, यह रुक्मि पर्वत आ गया। फिर उसके बाद में यह हैरण्यवत क्षेत्र आ गया। उसके बाद में जो पर्वत आया, यह शिखरणी पर्वत आ गया। इसके अन्त में यह जो क्षेत्र बना, यह भरत क्षेत्र की तरह ऐरावत क्षेत्र बन जाता है। ये छह पर्वत हो गए। एक, दो, तीन, चार, पाँच और छह, ये जो lines दिख रही है, ये पर्वतों की lines हो गई और जो बीच में यह space दिख रहा है, यह उसका region हो गया। यह भरत, हैमवत, हरि, यह पूरा विदेह, फिर यह रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत। इस तरह से ये सात क्षेत्र हैं।

भरतक्षेत्र आदि क्षेत्रों के चारों दिशाओं की क्षेत्र स्थिति का वर्णन

भरतक्षेत्र:

अब अगर आपसे कहा जाए कि हर एक क्षेत्र की संरचना देखते हुए यह भी जान ले कि इस जम्बूद्वीप के बाहर क्या है? यह पूरा सब लवण समुद्र है। जम्बूद्वीप के बाहर जो कुछ भी है, क्या है? लवण समुद्र है। इससे यह भी हम समझ सकते हैं कि जो भरत क्षेत्र है, उस भरत क्षेत्र के दक्षिण दिशा में क्या है? मतलब नीचे की ओर क्या है? भरत क्षेत्र के आगे क्या है? लवण समुद्र। अतः भरत क्षेत्र के नीचे दक्षिण दिशा में क्या है? लवण समुद्र छू रहा है। इधर हम देखेंगे तो यह भी लवण समुद्र छू रहा है, इधर की तरफ देखेंगे पूर्व दिशा में, वह भी और पश्चिम दिशा में भी लवण समुद्र है। ऊपर की ओर जब हम देखेंगे तो यह भरत क्षेत्र की अपेक्षा से उत्तर दिशा कहलाएगी। अभी दिशाओं को इस तरह से समझना। भरत क्षेत्र की उत्तर दिशा में पहला पर्वत हुआ। कौन-सा? हिमवन पर्वत। कौन-सा पर्वत? हिमवन पर्वत।

हैमवत क्षेत्र:

अब हम जब भरत क्षेत्र के बाद में हैमवत क्षेत्र की चर्चा करेंगे तो यह हैमवत क्षेत्र है। यह दूसरे number का हैमवत क्षेत्र है। अब इस हैमवत क्षेत्र के दक्षिण दिशा में क्या हुआ? हिमवन पर्वत और उत्तर दिशा में क्या हुआ? महाहिमवन पर्वत। जो शास्त्रों में लिखा रहता है, वह आपको ऐसे समझ में आएगा, जब आप इस तरीके से समझने की कोशिश करेंगे तो दो दिशाएँ तो इसकी ये पर्वतों से छू रही हैं और बाकी का यह इधर दोनों तरफ समुद्र है, इस तरह से।

हरि क्षेत्र:

फिर दूसरे के बाद यह तीसरे number का क्षेत्र आया- भरत, हैमवत, हरि। हरि क्षेत्र आया तो इस हरि क्षेत्र में भी
दक्षिण दिशा की ओर क्या हो गया? महाहिमवान पर्वत और उत्तर दिशा की ओर हो गया निषध पर्वत।

विदेह क्षेत्र:
जब हम विदेह क्षेत्र की बात करेंगे तो विदेह क्षेत्र के दक्षिण दिशा में कौन-सा पर्वत? निषध पर्वत, उत्तर दिशा में नील पर्वत मतलब विदेह क्षेत्र एक तरफ निषध पर्वत से घिरा है, एक तरफ नील पर्वत से घिरा है और दोनों तरफ पूर्व-पश्चिम में तो समुद्र है।

रम्यक क्षेत्र:
फिर उसके बाद में हम इस पाँचवें number के क्षेत्र पर आ गए तो यह कहलाया रम्यक। इस रम्यक क्षेत्र के
दक्षिण दिशा में क्या है? नील पर्वत। उत्तर दिशा में क्या है? रुक्मि पर्वत, यह रुक्मि पर्वत हो गया।

हैरण्यवत क्षेत्र:
यह छठवें number का क्षेत्र आ गया अब! कौन-सा? हैरण्यवत। इसके दक्षिण दिशा में क्या है? रुक्मि पर्वत।
उत्तर दिशा में क्या है? शिखरी पर्वत।

ऐरावत क्षेत्र:
अब यह सातवें number का क्षेत्र आ गया ऐरावत क्षेत्र। ऐरावत क्षेत्र के दक्षिण दिशा में क्या है? शिखरणी पर्वत,
उत्तर दिशा में क्या है? उत्तर दिशा में लवण समुद्र, पश्चिम दिशा में इधर⬅️ लवण समुद्र, पूर्व दिशा में भी लवणसमुद्र। यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि आपको अच्छे ढंग से यह समझ में आ जाए कि किसकी निचली दिशा में, दक्षिण दिशा में क्या है और किसके उत्तर दिशा में क्या है? अब इस तरह से आप देखो तो ये भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र, ये दोनों एक, दो और तीन दिशाओं में तो लवण समुद्र से घिरे हुए हैं। केवल यही दो क्षेत्र तीन दिशाओं में लवण समुद्र से घिरे हुए हैं, बाकी तो सब दो-दो दिशाओं में घिरे हुए हैं।

भरत और ऐरावत क्षेत्र में छह कालों का परिवर्तन होता है:
अब हम देखें! यह जो भरत क्षेत्र है, इसको हम समझ ले कि इस भरत क्षेत्र में ही, छह कालों का परिवर्तन होता है, जो आगे बताये जाएँगे, आगे के सूत्रों में आएगा। यह जो दूसरा क्षेत्र है, तीसरा क्षेत्र है, यह पाँचवें और छठवें number का क्षेत्र है और यह सातवें number का क्षेत्र है, इसमें भी कर्मभूमि है और यहाँ पर

भी छह कालों का परिवर्तन होता है। छह कालों का परिवर्तन केवल एक इस क्षेत्र में होगा पहले में और सातवें number में। एक simple से समझने के लिए, कर्मभूमि केवल यहाँ है। वह भी तब आएगी जब काल परिवर्तन होगा। जब काल परिवर्तन होकर के चतुर्थ काल, पंचम काल ये आते हैं तब यह कर्मभूमि की व्यवस्था पहले और सातवें number के क्षेत्र में बनती है। इसके अलावा कर्मभूमि अगर मिलेगी तो यह विदेह क्षेत्र में मिलेगी। कहाँ मिलेगी? इस विदेह क्षेत्र में।

बाकी चार क्षेत्रों में शाश्वत भोगभूमियाँ हैं:
यह जो क्षेत्र है, इनके बारे में सिर्फ अभी इतना जानना है कि ये भोगभूमियाँ हैं। ये क्या हैं? ये भोगभूमियाँ हैं। दूसरे number का क्षेत्र हैमवत, यह भोगभूमि का क्षेत्र है। तीसरे number का? हरि, यह भी भोगभूमि है, यह भी भोगभूमि है और यह भी भोगभूमि है। यह एक simple सा idea ले लो आप। एक जम्बूद्वीप के अन्दर इस तरह से एक(हैमवत), दो(हरि), तीन(रम्यक), चार(हैरण्यवत), ये शाश्वत भोगभूमियाँ हैं। यहाँ हमेशा भोगभूमि ही रहेगी।

शाश्वत कर्मभूमि और शाश्वत भोगभूमि की व्यवस्था का वर्णन
पहले(भरत) क्षेत्र में भोगभूमि भी आएगी, कर्मभूमि भी आएगी। यहाँ (ऐरावत) पर भी भोगभूमि भी आएगी, कर्मभूमि भी आएगी और इस विदेह क्षेत्र में, इसमें दोनों चीजें हैं। इसमें भोगभूमि भी है, कर्मभूमि भी हैं और दोनों चीजें शाश्वत हैं। छोटी व्यवस्था समझ रहे हैं न! difference, चीजें वही घूम रही हैं। एक शाश्वत मतलब हमेशा बनी रहने वाली चीज। शाश्वत व्यवस्था केवल दूसरे, तीसरे, पाँचवें और छठवें number के क्षेत्र में भोगभूमि है, शाश्वत व्यवस्था है, शाश्वत है! मतलब हमेशा रहेंगी, इनमें कोई भी काल परिवर्तन नहीं होगा। काल परिवर्तन केवल पहले में और सातवें में होगा। जब काल परिवर्तन होता है, तो कभी भोगभूमि भी आएगी, कभी कर्मभूमि भी आएगी। इसी तरीके से इस सातवें number के क्षेत्र में आएगी लेकिन यह जो विदेह क्षेत्र है इसमें जो भी होंगी, भोगभूमि भी है इसमें और कर्मभूमि भी हैं और वे सब शाश्वत हैं।

जम्बूद्वीप में सुमेरु पर्वत का वर्णन
अब कर्मभूमि और भोगभूमि भी इसमें कहाँ है? कैसे समझें? यह जो बीच का हम point बना रहे है, यह हम अभी आपको छोटा-सा सुमेरू पर्वत दिखा रहे हैं। जिसे हमने बोला था 'मेरूनाभिर्' जम्बूद्वीप का यह नाभि की तरह मेरू पर्वत यह बीचों-बीच में है। 'वृत्तोयोजनशतसहस्र' यह तो जम्बूद्वीप⭕ का एक लाख योजन का यह विस्तार जम्बूद्वीप का हो गया। अब इस सुमेरू पर्वत के इधर➡️ direction में, यह क्या हो गई? east direction, पूर्व। हमने बीच में एक line खींच दीं। इधर⬅️ भी हम जो है, हमने एक line खींच दी। अब यह क्या हो गया? इधर एक↗️, दो↘️, तीन↖️, चार↙️, ये चार portion बन गए। अब इन चार portions में भी थोड़ा-सा इसकी design और बना देता हूँ, अभी समझाने के लिए। यह देखिये!

यह design बनी बढ़िया। अब यह क्या बना? अब इसमें देखेंगे, ये जो हमने चार बनाए हैं, ये गजदंत कहलाते हैं। क्या बोलते हैं इनको? हाथी के दांत की तरह दिख रहे हैं न बड़े-बड़े। ये सब सुमेरू पर्वत से निकले हुए, ये गजदंत नाम के पर्वत हैं।

विदेह क्षेत्र संबंधी बत्तीस विदेह का वर्णन

अब देखो! यह पूरा विभाजन हो गया। इधर जो portion दिखाई दे रहा है, वह एक तो यह ↗️ हो गया और एक यह ↘️ हो गया और एक इधर यह ↖️ हो गया और एक यह ↙️ हो गया। यह ➡️ कहलाएगा पूर्व विदेह। यह क्या कहलाएगा? और यह ⬅️ कहलाएगा पश्चिम विदेह। पश्चिम direction में है तो पश्चिम विदेह, पूर्व direction में तो पूर्व विदेह। यह शाश्वत कर्मभूमियाँ, इनमें बड़ी-बड़ी नगरियाँ बनी होती हैं। (यहाँ पर हम बनायें, मतलब ऐसे ये समझ लो, ऐसे portion अब हम यहाँ बनाये दे रहे हैं, जितने बन जाए, गिनती मत करना, जितनी जगह, उतने बनाये दे रहा हूँ, ऐसे करके ये portion बना दिए।) ये आठ इधर बनाएँगे नगरियाँ, आठ बड़े-बड़े नगर और ये नगर नहीं हैं जैसा एक यह भरत क्षेत्र है। वैसे ये आठ बड़े-बड़े क्षेत्र हैं, ऐसा जानना। क्या समझ में आया? जैसा एक भरत क्षेत्र है यह, उतने बड़े-बड़े उससे भी ज्यादा बड़े-बड़े ये एक-एक क्षेत्र हैं तो आठ इधर↘️ हो गए, आठ ऊपर↗️ हो गए और आठ ही इधर↙️ हो गए, आठ ही इधर↖️ हो गए। ये कहलाते हैं बत्तीस विदेह क्षेत्र। नाम सुना है न! बत्तीस विदेह।

विदेह का मतलब

इन विदेह क्षेत्रों में हमेशा कर्मभूमि का ही वातावरण रहता है, इसलिए इनको विदेह क्षेत्र कहा जाता है। विदेह मतलब जहाँ पर देह से मुक्त होने का हमेशा उपक्रम चलता रहता है। देह से विमुक्त होने का जहाँ पर हमेशा उपाय बना रहता है इसलिए इस क्षेत्र का नाम है- विदेह क्षेत्र। यहाँ पर रहने वाले लोग कभी भी अपनी साधना से केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं और इन क्षेत्रों में तीर्थंकर भी अवश्य रहते हैं। सभी क्षेत्रों में रहे, जरूरी नहीं लेकिन कुछ क्षेत्रों में तीर्थंकर भी अवश्य मिलेंगे और कम से कम जब इसके चार portion बन गए एक↗️, दो↘️, तीन↖️, चार↙️, तो इधर भी आठ हैं। आठ क्षेत्र नीचे, आठ ऊपर हैं तो इन आठों में से कम से कम एक जगह पर एक तीर्थंकर जरूर होंगे। यहाँ↗️ पर भी, यहाँ↘️ पर भी, यहाँ↖️ पर भी, यहाँ↙️ पर भी, ऐसा भी मान लेना। इसलिए इस क्षेत्र का नाम विदेह क्षेत्र है।

Class 14

जम्बूद्वीप संबंधी सातों क्षेत्रों के नामों की सार्थकता

प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक पर्वत इसका भी अपना एक सार्थक नाम है- भरत क्षेत्र है। आपको बताया था कि भरत नाम के क्षत्रिय राजा जो सबसे पहले होते हैं, उनके कारण से इसका नाम भरत क्षेत्र पड़ता है। दूसरा, जो यह भरत के बाद में हैमवत क्षेत्र आता है, यह हैमवत क्षेत्र भी अपने आप में जो हिमवान पर्वत है उसके निकट दोनों ओर से घिरा होने के कारण से हैमवत क्षेत्र होता है। यह हरि मतलब होता है सिंह के समान शुक्ल वर्ण का, यह क्षेत्र यहाँ पर रहने वाले लोगों का रंग शुक्ल होता है इसलिए इसको हरि क्षेत्र कहा जाता है। यह विदेह हो गया और यह हो गया रम्यक, जहाँ पर भोगभूमि है, रमणीय स्थान है, इसका नाम रम्यक है। यहाँ पर भी जो है अच्छे हैरण्य के समान मतलब स्वर्ण के समान रंग वाले यहाँ पर भी लोग रहते हैं इसलिए इसका नाम हैरण्यवत है और यह ऐरावत जैसे भरत क्षेत्र का राजा होता है चक्रवर्ती, उसी तरीके से यहाँ के भी चक्रवर्ती का नाम ऐरावत होगा तो उसके नाम से ऐरावत क्षेत्र होगा।

जम्बूद्वीप संबंधी छह कुलाचलों के नामों की सार्थकता

इसी तरह से पर्वतों के विषय में भी हिमवन मतलब हिम से घिरा हुआ है, यह छोटा हिमवन कहलाता है। यह बड़ा हिमवन, महाहिमवान। यहाँ पर छोटा है, यह बड़ा है। यहाँ पर कम बर्फ होगी, यहाँ ज्यादा होगी। हिमवन, महाहिमवन, निषध। निषध का मतलब होता है- जहाँ पर आकर के देव-देवियाँ क्रीड़ा करें, उसका नाम है- निषध पर्वत। नील पर्वत, ये बिल्कुल जैसे मयूर का कंठ होता है- नील वर्ण का, ऐसे रंग का होता है इसीलिए इसका नाम है नील पर्वत। रुक्मि पर्वत, यह चाँदी की तरह सफेद होता है, इसलिए इसका नाम रुक्मि पर्वत और इसमें बहुत सारे शिखर बने होते हैं, कूट बने होते हैं इसलिए इसका नाम शिखरी पर्वत। ऐसा भी प्रत्येक पर्वत और प्रत्येक क्षेत्र के बारे में, नाम के अनुसार उनकी छोटी-छोटी निरुक्ति के अर्थ से जानकारी लिए रहना।

नक्शे में विदेह क्षेत्र संबंधी भोगभूमियों देवकुरु और उत्तरकुरु का वर्णन

अब यहाँ हमने विदेह क्षेत्रों में कर्मभूमि तो बता दी, अब यहाँ भोगभूमि कहाँ है? अब यह जो portion आपको दिख रहा है, यह और यह यही भोगभूमि का क्षेत्र है। जो दक्षिण⬇️ दिशा में है, उसको कहते हैं- देवकुरु। क्या बोलेंगे? देवकुरु और जो उत्तर⬆️ दिशा में है उसको बोलेंगे उत्तरकुरु। इसी में यह और समझ लो कि यह जो उत्तरकुरु क्षेत्र है, इसके इस point पर, इधर इस दिशा में यहाँ होता है- जम्बूवृक्ष, जिसके नाम पर इस द्वीप का नाम पड़ता है- जम्बूद्वीप। यह जम्बूवृक्ष होता है और इधर इस दिशा में होता है- शाल्मली वृक्ष, ये भी चैत्य वृक्ष होते हैं। इनका भी विस्तार बहुत बड़ा-बड़ा होता है और इनके परिवार वृक्ष होते हैं और इनकी भी सभी अकृत्रिम रचनाएँ हैं और यहाँ पर भी सब देवों का रहना होता है। अब हम आपको कल जो चीज बताई थी, लोगों की समझ नहीं आई, थोड़ा-सा इसी भरत क्षेत्र को और जो है ज्यादा describe करते हैं।

नक्शे में भरतक्षेत्र का वर्णन

यह दिख रहा है आपको भरतक्षेत्र। यह थोड़ा-सा बड़ा बनाया है। कल आपसे कह रहा था यह धनुषाकार भरतक्षेत्र बनाओ, यह भरतक्षेत्र हो गया। अब इसके बीच में एक **line** डालने को बोला था, यह वाली line, बीच की line. यह है- विजयार्ध पर्वत। कौन-सा पर्वत? विजयार्ध पर्वत है। यह है- गंगा नदी, यह है- सिंधु नदी। इस विजयार्ध पर्वत और एक गंगा और सिंधु नदी के कारण से इस भरतक्षेत्र के छह खण्ड हो गए। एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह; छह portion हो गए, यह कहलाता है- पूरा षट्खण्ड। छह खण्डों का राजा जो चक्रवर्ती होता है, वह यह छह खण्ड है। इनमें यह रहता है- आर्यखण्ड। यह क्या है? आर्यखण्ड, जो आपको बता रहा था। अब बाकी के ये बचे पाँच म्लेच्छखण्ड होते हैं, एक आर्यखण्ड होता है। इसी में यहाँ पर इस म्लेच्छखण्ड के यहाँ बीचों-बीच में इधर जो है वृषभाचल पर्वत होता है। इस वृषभाचल पर्वत पर ही चक्रवर्ती जो है, अपना नाम लिखता है।

विजयार्ध पर्वत के नाम की सार्थकता:

यह विजयार्ध पर्वत होता है, इसमें बड़ी-बड़ी गुफाएँ होती हैं, बहुत अंधकार होता है, बड़े-बड़े कपाट होते हैं, यह केवल चक्रवर्ती ही खोल पाता है और उसमें मतलब कि खोलने के बाद उसमें इतना धुआँ निकलता है, उसे छह महीने बैठकर वहाँ इंतजार करना पड़ता है। इतनी वहाँ से मतलब हवा निकलती है। उसके बाद में यह विजयार्ध पर्वत को cross करके म्लेच्छखण्डों में पहुँचता है, तो यहाँ पर जो है उसकी चक्रवर्ती की विजय, इस विजयार्ध पर्वत को पार करने पर मतलब आधी विजय उसने कर ली, इसलिए इस पर्वत का सार्थक नाम क्या है? विजय+अर्ध मतलब आधी विजय हो गई चक्रवर्ती की, इसलिए इस पर्वत का नाम है- विजयार्ध और वह जिस पर्वत पर अपना नाम लिखता है, उसका नाम होता है- वृषभाचल पर्वत। अब शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ भी चक्रवर्ती हुए, वे सब इसी तरीके से सब क्षेत्रों की विजय करके इसी पर्वत पर पहुँच कर अपना नाम लिखते हैं।

नक्शे में ढाई द्वीप का वर्णन

अब यह जम्बूद्वीप जो था, यह अब आपके सामने जब ढाई द्वीप का नक्शा आएगा तो यह जम्बूद्वीप इतना सा रह गया। अब इस जम्बूद्वीप के दूने विस्तार को लिए हुए, ये जो dot dot dot dot दिख रहे हैं नीले-नीले, यह सब क्या है? लवणसमुद्र हो गया। फिर उसके around में line खींची हुई है, यह हो गया धातकीखण्ड द्वीप। फिर उसके बाहर कालोदधि समुद्र और उसके बाहर यह पुष्करार्ध द्वीप हो गया। ये ढाई द्वीप होते हैं।

नक्शे में पंचमेरू का वर्णन

अब जम्बूद्वीप जब ये है, तो ये सुमेरू पर्वत हो गया। जैसे यहाँ एक सुमेरू पर्वत होता है, वैसे ही जब आप इस धातकीखंड द्वीप में आएँगे तो यहाँ⬅️ पर भी एक ऐसा सुमेरू पर्वत है और इधर➡️ भी एक ऐसा

सुमेरु पर्वत है। एक छोटा, मोटा-मोटा idea! सुनते रहते हो न पाँच मेरू होते हैं! फिर जब इधर आप पुष्करार्ध द्वीप में आओगे तो एक मेरू यहाँ⬅️ है और एक मेरु यहाँ➡️ है। हो गए न पाँच मेरू!

ढाई द्वीप में स्थित पाँच मेरू एवं पाँच-पाँच भरतक्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र

इस एक मेरू के चारों ओर जैसी व्यवस्था है, वैसी ही व्यवस्था इन सभी मेरू पर्वतों के चारों ओर है। इसलिए जब एक मेरू में एक भरत है, एक ऐरावत है, तो जब ये मेरू में देखेंगे तो इसमें भी यहाँ⬇️ एक भरत होगा, यहाँ⬆️ एक ऐरावत होगा, यहाँ भरत⬇️ होगा, यहाँ⬆️ ऐरावत होगा। जब इस पर आएँगे तो यहाँ⬇️ भी भरत होगा, एक यहाँ⬆️ भी ऐरावत होगा, इस तरीके से कितने भरत हो गए? पाँच मेरू के पाँच भरत हो गए और पाँच ही ऐरावत हो गये। ढाई द्वीप में पाँच भरत क्षेत्र होते हैं, पाँच ऐरावत क्षेत्र होते हैं मतलब कि ढाई द्वीप में दस कर्मभूमियाँ ये हो गई गिनती की।

ढाई द्वीप में स्थित **170** शाश्वत कर्मभूमियों का वर्णन

फिर जब हमने कर्मभूमियों की बात की तो शाश्वत कर्मभूमियाँ ये भी हैं। एक मेरू पर्वत के साथ कितनी कर्मभूमियाँ हैं? बत्तीस। इसी तरीके से इधर⬅️ भी इस मेरू के साथ भी बत्तीस होंगी, इसके➡️ साथ होंगी, इसके⬅️ साथ होंगी, इसके➡️ साथ होंगी। बत्तीस में आपको पाँच से गुणा करना है। कितने हो गए? 32*5= 160। अतः 160 कर्मभूमियाँ होती हैं और पाँच भरत और पाँच ऐरावत की कर्मभूमियाँ और मिला ले तो कितनी हो गई? 170, ये कर्मभूमियाँ total हो जाती हैं, जहाँ पर तीर्थंकर हो सकते हैं। एक साथ भी हो सकते हैं और एक साथ भी ये तीर्थंकरों का अवस्थान अजितनाथ भगवान के समय पर रहा है, जो आपको पहले बताया गया है।

मध्यलोक के **458** अकृत्रिम जिनालयों का वर्णन

इतनी जानकारी के साथ में अब आप ढाई द्वीप में बताए जाने वाले जो 458 जिनालय थे, जिनकी चर्चा हमने कल की थी, अब आप थोड़ा-सा देखेंगे इस map के हिसाब से तो आपको अच्छा समझ में आ जाएगा। अब हमें बताओ वह गिनती, कल आपको बताया था।

अस्सी वक्षार पर्वत के जिनालय

सबसे पहले वक्षार पर्वतों का उल्लेख किया था। एक चीज और बताएँ देता हूँ, ये वक्षार पर्वत कहाँ हैं? ये विदेह क्षेत्र की जो कर्मभूमियाँ हैं, जो आठ नगरियों का विभाजन हो रहा है, उनमें जैसे देखो! एक पूरे जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र हैं तो सात क्षेत्रों के विभाजन के लिए छह portion चाहिए पड़े, छह पर्वत चाहिए पड़े। इधर आठ चीजों के विभाजन के लिए चार तो वक्षार पर्वत होते हैं और तीन विभंग नदियाँ होती हैं तो सात चीजों से आठ portion बन जाएँगे, यह ध्यान रखो! इसमें क्या है? यहाँ चार तो वक्षार पर्वत हैं और

एक-एक पर्वत पर एक-एक जिनालय बने हुए होंगे और तीन बीच में विभंग नाम की नदियाँ होती हैं, विभंग नदियाँ बोलते हैं। इस तरीके से इधर है और वैसे ही इधर है। वक्षार पर्वत कितने हो गए?

- चार(4) यहाँ↗️ हो गए,
- चार(4) यहाँ↘️ हो गए,
- चार(4) यहाँ↖️ हो गए,
- चार(4) यहाँ↙️ हो गया।

वक्षार पर्वत एक मेरू संबंधी 16 हो गए तो पाँच मेरू संबंधी 80 हो गए।

प्रत्येक गजदंत पर एक जिनालय होता है

फिर आपसे कहा था उसमें 20 और जोड़ देना। क्या जोड़ना? यह है गजदंत पर्वत। यह जो गजदंत पर्वत है, इन पर भी एक-एक जिनालय होते हैं। बहुत सारे कूट बने होते हैं, उन कूटों में जो सिद्धायतन कूट होता है, उस पर एक जिनालय होता है। ये चार दिशाओं में 4 पर्वत हैं, इन चार पर्वतों पर एक-एक जिनालय इन पर होता है। दिख रहे न गजदंत! एक मेरू संबंधी चार गजदंत हो गए तो पाँच मेरू संबंधी 20 गजदंत हो गए। note करते जाना, बार-बार नहीं बताऊँगा। अस्सी वक्षार पर्वत, बीस गजदंत पर्वत, ये सौ हो गए।

रूचकवर पर्वत के चार जिनालय

उसके बाद में आपको रूचकवर पर्वत बताया था। अब वह पर्वत तो ढाई द्वीप के बाहर, जो तेरहवें नम्बर का पर्वत है, उसका नाम है- रुचकवर पर्वत। उस रूचकवर पर्वत पर भी 4 जिनालय चार दिशाओं में होते हैं तो वह note कर लो। वह वहाँ हो गया।

कुण्डलवर पर्वत के चार जिनालय

फिर उसके बाद में कुण्डलवर पर्वत। जब आप उस तेरहवें द्वीप से वापस लौटेंगे (आओगे कि नहीं आओगे वापिस? जम्बूद्वीप में नहीं आओगे) जब वापिस आओगे तो बीच में ग्यारहवें नम्बर का द्वीप पड़ेगा, जिसका नाम है- कुण्डलवर द्वीप। उस पर भी चार जिनालय चार दिशाओं में होते हैं। उसके चार count करो। ठीक है!

मानुषोत्तर पर्वत पर स्थित चार जिनालय

फिर मानुषोत्तर पर्वत! यह जो ढाई द्वीप का विभाजन करने वाला, जहाँ से ढाई द्वीप रह गया, यहाँ पर एक पर्वत होता है। यही जो है ढाई द्वीप इधर और बाकी के सब द्वीप-समुद्र अलग। यह मानुषोत्तर पर्वत भी गोलाकार होता है, जो ढाई द्वीप को विभाजित करने वाला होता है, तो उसके ऊपर भी चार दिशाओं में 4 जिनालय हो गए। कितने हो गए? चार दिशाओं के चार जिनालय। चार ही होंगे न अभी तो।

30 कुलाचल पर्वत पर **30** जिनालय
फिर आगे कुलाचल पर्वत। कुलाचल पर्वत ये कहलाते हैं, ये जो आपको बताए गए न! एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, ये जो हैं, इन्हीं का नाम है- कुलाचल पर्वत। ये कुलाचल पर्वत कितने हैं? छह हैं। सभी कुलाचल पर्वतों पर भी एक-एक जिनालय बने हुए हैं। अब ये सभी कुलाचल पर्वत एक यहाँ पर हैं मतलब एक-एक पर एक-एक जिनालय बने हुए हैं तो एक जम्बूद्वीप में एक मेरू संबंधी कितने हैं ये? छह हैं। फिर पाँच मेरू संबंधी कितने हो जाएँगे? 30 हो गए तो ये कुलाचल पर्वत हो गए।

4 इष्वाकार पर्वत के **4** जिनालय
फिर आगे इष्वाकार पर्वत! ये कहाँ होते हैं? बताओ! कहाँ होते हैं? ये धातकीखण्ड द्वीप में होते हैं। जहाँ पर इन द्वीपों के अन्दर जो धातकीखण्ड द्वीप है, उसका विभाजन करने वाले ये इष्वाकार पर्वतों के माध्यम से यह धातकीखण्ड द्वीप का विभाजन होगा। ऊपर की ओर और नीचे की ओर ये जो पर्वत होंगे, उसके माध्यम से इसका विभाजन होता है। ये इष्वाकार पर्वत भी चार होंगे। धातकीखण्ड द्वीप में भी और इधर पुष्करार्ध द्वीप में भी, इसके विभाजन करने वाले पर्वत हो जाते हैं तो इस तरीके से यह 4 हो गए।

5 देवकुरु-**5** उत्तरकुरु संबंधी जिनालय
फिर देवकुरु, उत्तरकुरु तो यही हो गया। यह ⬇️ देवकुरु हो गया, यह ⬆️ उत्तरकुरु हो गया। इसमें भी जो ये वृक्ष हैं, इन्हीं को अलग से एक-एक जिनालय के रूप में कहा होगा तो यह 5×2=10 ये हो जाएँगे।

नंदीश्वर द्वीप में स्थित **52** जिनालय
उसके अलावा आठवाँ द्वीप जो नंदीश्वर द्वीप है, वह हो गया। कितने? 52 जिनालय

पंचमेरू के **80** जिनालय
पाँच मेरू संबंधी, एक-एक मेरू पर सोलह-सोलह जिनालय होते हैं तो 16×5=80 हो गया। एक मेरू पर, जो विस्तार है एक मेरू का भी, वह भी एक लाख योजन ऊँचाई का है, तो उसमें चार उसके portion हैं, चार वन हैं।

पहला कहलाता है- भद्रसाल वन। पहला क्या है? भद्रसाल वन।

Class 15

उस भद्रसाल वन की चारों दिशाओं में एक-एक जिनालय बना होगा तो कितने जिनालय हो गए? चार।

फिर उसके ऊपर आता है- नंदन वन, उसकी भी चारों दिशाओं में चार जिनालय बने हुए हैं, एक-एक जिनालय बना हुआ है, तो वे उसके चार जिनालय हो गए।

फिर उसके ऊपर आएगा सोमनस वन, उसकी भी चारों दिशाओं में एक-एक जिनालय बना हुआ है, तो उसके चार जिनालय हो गए।

फिर उसके ऊपर आएगा पाण्डुक वन और उस पाण्डुक वन के भी चारों दिशाओं में एक-एक जिनालय बने हुए हैं तो उसके भी चार जिनालय हो गए।

ऐसे एक पर्वत, सुमेरू पर्वत पर सोलह जिनालय होते हैं और यही पाँचों मेरुओं की व्यवस्था है। 16×5=80 जिनालय ये सुमेरू पर्वत के हो जाते हैं। इस तरह से आप मध्यलोक के जो 458 जिनालय हैं, उनकी एक जानकारी रख सकते हो और यह छोटा-सा एक idea अपने दिमाग में रख सकते हो कि कहाँ पर क्या चीज, किस रूप से स्थित है?

हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः**।।12।।**

अब यह पर्वतों के बारे में ही बताया जा रहा है। पर्वत कौन से? हिमवन, महाहिमवन ये जो छह कुलाचल पर्वत हैं, इन्हीं के बारे में बताया जा रहा है कि ये किस मय हैं? किसके बने हुए हैं? कैसे बने हुए हैं? इनके रंग क्या है? कहते हैं- हेम मतलब होता है- सोना, स्वर्ण तो यह स्वर्णमय है। 'मय' सबके साथ में जोड़ लेना। मय जानते हो? उस मय मतलब उसी जैसा बिल्कुल तो हेममय। आचार्य महाराज का तो यह कहना रहता है कि यह हेम का ही बना हुआ है। मय मतलब होता है उससे निवृत्त होना। रचना जिसकी जिससे होती है, उसको उसके साथ में 'मयक्' प्रत्यय लगाया जाता है संस्कृत में तो अगर यह स्वर्ण का बना होगा तभी यह हेममय कहलाएगा।

'अर्जुन**'** होता है यह एक तरह से सफेद रंग का चाँदी समझ लो। 'हेमार्जुन तपनीय**',** यह तपनीय भी सोने का नाम ही होता है। 'तपा हुआ सोने की तरह' अलग-अलग पर्वत हैं। हेम-अर्जुन-तपनीय और कौन-सा? 'वैडूर्य' मतलब नीलमणि का बना हुआ। वह नील पर्वत वैडूर्यमणि का हो ही गया। वैडूर्यमणि नीली होती है। फिर उसके बाद में 'रजत', 'रुक्मि पर्वत' आ गया। यह 'रुक्मि' 'रजत' का ही यह दूसरा नाम है। फिर हेममय, शिखरिणी पर्वत वह भी हेममय होता है। इस तरह से ये छह पर्वत कैसे बने हुए हैं? ये इन्हीं पर्वतों के बारे में बताए जाने वाला यह सूत्र है।

मणिविचित्रपार्श्वा ऊपरि मूले च तुल्य विस्ताराः**।।13।।**

इसी को बता रहा था कि यह पर्वत 'मणिविचित्र पार्श्वा' पार्श्व का मतलब बगल का भाग। मतलब प्रत्येक पर्वत का पार्श्व भाग यह कहलाता है- आजु-बाजू का भाग, पार्श्व भाग है, यह कैसा बना हुआ है? लिखा गया है 'मणियों से यह विचित्र है' मतलब अनेक प्रकार की मणियों से नाना प्रकार की आभा वाला बना हुआ है, अनेक तरह की इसमें मणियाँ खचित हैं। 'मणिविचित्रपार्श्वा' 'ऊपरि मूले च तुल्य विस्ताराः'

कुलाचल पर्वतों की विशेषता

अब यहाँ पर यह बताया गया कि इसका जो विस्तार है, विस्तार मतलब हो गया एक तरह से उसकी चौड़ाई तो वह ऊपर-नीचे और बीच में यह बराबर है यानि जितनी चौड़ाई उसकी नीचे होगी, उतनी ही मध्य में होगी और उतनी ही सबसे ऊपर होगी तो यह इसकी विशेषता है। 'ऊपरि मूले च तुल्य विस्तारा' तुल्य विस्तार वाला होता है। एक समान विस्तार वाला इसको कहा गया है। अब इससे हम कई तरह के अंदाज लगा सकते हैं कि या तो इन पर्वतों का जो विस्तार है वह केवल नीचे, मध्य में और ऊपर तो तुल्य है और बीच में? नीचे और बीच के बीच में भी कुछ होता है और बीच और ऊपर के बीच में भी कुछ होगा तो उनकी उसमें जो संरचना है, वह कुछ भी हो सकती है। लेकिन नीचे, मध्य में और ऊपर यह जो है वह तुल्य विस्तार के साथ होगा मतलब उनका विस्तार एक समान होगा, ऐसा इस सूत्र से अर्थ निकलता है। इन पर्वतों की यह विशेषता बताई गई है।

अकृत्रिम रचनाएँ, कृत्रिम रचनाओं से बहुत अधिक रमणीय है

ये सभी पर्वत अकृत्रिम रूप में हैं, जिनकी कभी किसी ने कोई रचना नहीं की है लेकिन ये सब अपने स्वभाव से बने हुए हैं। ये जितनी भी रचनाएँ आपको बताई जा रही है, सब स्वाभाविक रूप से बनी हुई रचनाएँ हैं। इससे आप अंदाजा लगा सकते हो कि दुनिया में कृत्रिम चीजों से ज्यादा अकृत्रिम रचनाएँ बनी हुई हैं। इस भूगोल को पढ़ने का सबसे अच्छा फायदा यह होता है। मतलब अगर आप सुन्दरता देखना चाहो, अगर आप मनोहरता देखना चाहो, रमणीयता देखना चाहो, वैभव देखना चाहो तो आपको लगने लगेगा कि जिस तरह से यहाँ पर बताया जा रहा है, वह कहीं बहुत गुना अच्छा है। हमारे पूरे देश के अन्दर नहीं, पूरे विश्व में भी कहीं ऐसी कोई रचनाएँ आपको नहीं मिलेगी, जो इतनी लुभावनी, इतनी रम्यक, इतनी मनोहर रचनाएँ हो। कहाँ देखा आपने सोने के पर्वत, चांदी के पर्वत? एक चीन की दीवाल को सिर पर लिये रखे रहते हो और वह भी जो है दूसरे देश की दीवाल है और उस पर गर्व करते हो। कहाँ है? कुछ भी तो नहीं है। कहीं भी जा करके देखोगे, मकबरे बने मिलेंगे और कहीं और कुछ क्या मिलता है? ज्यादा हो तो बस कहीं घंटाघर है, कहीं चिड़ियाघर है। इसके अलावा क्या है दुनिया में? कहीं थोड़ी बहुत बर्फ है, वहाँ पर skating कर लो। बस! इसके अलावा और क्या होता है? आप देखो! ये इतने बड़े-बड़े पर्वत हैं। इन पर्वतों पर भी घूमने-फिरने का आनंद तब आएगा जब आप देव बनेंगे। अन्यथा मनुष्य बनकर के तो आप इन पर्वतों पर भी कोई आनंद नहीं ले पाएँगे। वहाँ तक पहुँच भी नहीं पाएँगे। देव लोग ही होते हैं जो ऐसे स्थानों पर क्रीड़ा करते हैं तभी तो कहने में आता है कि देव लोग एक जगह पर नहीं रहते, घूमते ही रहते

हैं। जहाँ मन आए वहाँ पर क्षणभर में पहुँच जाते हैं, ऐसे उन देव लोगों के लिए ये क्रीड़ाओं के स्थान, यह पूरा लोक है। खासतौर से ये द्वीप और समुद्र। यह इतने अच्छे, सुंदर स्थान हैं, जहाँ पर उन देव लोगों को कभी भी उनका मन नहीं भरता। असंख्यात द्वीप हैं, असंख्यात समुद्र हैं। क्या नहीं होता है द्वीपों में और क्या नहीं होता समुद्रों में? जिन देवों की जितनी पहुँच होती हैं, वह उतने ही हिसाब से अपनी पहुँच में रहकर के उस तरह का आनंद लेते हैं, क्रीड़ा करते हैं। ये सब चीजें देखकर के आपको यह देखना है कि अकृत्रिम रचनाएँ दुनिया में सबसे ज्यादा है इसलिए कृत्रिम रचनाओं पर ज्यादा गर्व नहीं करना। हम लोग तो आज बनाते हैं या तो कल कोई दूसरा हड़प लेता है या खुद मिट जाता है। लेकिन ये रचनाएँ तो हमेशा बनी रहती हैं।

अकृत्रिम जिनालय का ध्यान पुण्य बंध एवं सम्यक्त्व वर्धन का कारण है

आचार्य कहते हैं- देखो! जिनके पार्श्व भाग अनेक मणियों से खचित हैं, जो स्वयं स्वर्णमय, रजतमय बने हुए हैं, ऐसे इन पर्वतों की शोभा और इनके ऊपर बने हुए एक-एक जो अकृत्रिम जिनालय, इनका आप कभी स्मरण भी करोगे तो आपके लिए पुण्य का बंध होगा, आपके सम्यक्त्व की वृद्धि होगी। अब तो कर सकोगे। कृत्रिम जिनालयों की वंदना करने के लिए आप हमेशा, शिखरजी जाते हो तो बस उसी की ही ज्यादा से ज्यादा वंदना करने का विचार कर पाओगे लेकिन अगर आप कुलाचल पर्वतों पर नहीं भी गए हो तो यहाँ बैठे-बैठे भी दिमाग से कुछ देख तो सकते हो। नहीं देख सकते? हिमवानपर्वत, महाहिमवान पर्वत, उन पर्वतों पर एक-एक बड़े-बड़े जिनालय, बहुत सारे कूट तो बने हुए हैं लेकिन उनमें एक कूट सिद्धायतन कूट है, जिस पर एक जिनालय बना हुआ रहता है। सभी पर्वतों पर आठ-आठ कूट होते हैं, उनमें एक पर एक जिनालय बना रहता है और वह अकृत्रिम जिनालय उसी तरह का होता है जिस तरह के हम जिनालय अन्यत्र अकृत्रिम जिनालय, जैसे रूचक पर्वत है, मानुषोत्तर पर्वत है, इन पर जैसे देखते हैं, वैसे ही तरीके के जिनालय होते हैं। यह भी मान कर चलो कि हर जिनालय में इतना विस्तार है कि उस जिनालय के बाहर और भीतर बहुत लंबाई-चौड़ाई योजनों में रहती है और उन जिनालयों में 108 प्रतिमा आप एक-एक जिनालय में देखोगे। पर्वतों पर चलते-चलते रास्ते में आपको सुमेरू पर्वत भी मिल जाएगा। नहीं मिलेगा? यात्रा करो। अभी तक तो आपने शिखर जी की यात्रा की है, अब यह अकृत्रिम यात्रा करो। जब इस अकृत्रिम यात्रा को करोगे तभी आपकी श्रद्धान दृढ़ बनेगा और यह सम्यक्त्व के लिए कारण बनेगा।

अकृत्रिम जिनालयों की ध्यान और श्रुतज्ञान के माध्यम से वन्दना

तीन पर्वतों पर चलने के बाद में कहाँ पहुँचोगे? विदेह क्षेत्र में पहुँचोगे। बीच में सुमेरु पर्वत मिलेगा, सुमेरु पर्वत देखोगे तो सबसे पहले बाहर से क्या देखने को मिलेगा? गजदंत पर्वत बड़े-बड़े ऐसे कुण्डलाकार। वह पर्वत एक तरफ निषध पर्वत को छू रहा है, तो निषध पर्वत को छुएँगे दो तरफ और ऊपर की ओर वे नील पर्वत को छू रहे हैं तो ऐसे इन पर्वतों पर अनेक कूट बने हुए हैं और उस पर जो है एक-एक जिनालय बने

हुए हैं, उस पर भी जाकर के आप अपना ध्यान लगाओ। फिर वहाँ से आओ देवकुरु-उत्तरकुरु, भोगभूमि में चले जाओ। यह क्या है? भोगभूमि। भोगभूमि में ये जिनालय बने हुए हैं। अब ये जिनालय भोगभूमि के लोगों के काम आते हैं या नहीं आते? इस विषय में कोई उल्लेख नहीं मिलता। हमें तो ऐसा लगता है यह केवल जिनालय बने हुए हैं, भोगभूमि तो एक स्थान है वहाँ के लोगों के कोई काम के नहीं है। वह एक तरफ जो जिनालय हैं, ये वृक्ष के रूप में भी बने हुए हैं और वह जो है देवकुरु-उत्तरकुरु में बने हुए हैं तो उनमें कोई भी जो वृक्ष हैं, वे अपनी एक side में अलग बने हुए हैं, वहाँ तक भोगभूमि के लोग नहीं पहुँच सकते हैं। ऐसा नहीं है कि भोगभूमि के लोग वहाँ दर्शन करने जाते हैं। भोगभूमि में दर्शन करने की कोई आवश्यकता नहीं है, किसी भी तरीके का वहाँ पर कोई भी धर्म क्रिया का कोई वातावरण नहीं होता है भोगभूमि में, इसलिए उसका नाम भोगभूमि है। इस तरह के जिनालयों पर वंदना करने वाले लोग या तो देव लोग होंगे या फिर ऋद्धिधारी मनुष्य होंगे और कोई नहीं जा सकेगा। ऐसे जिनालयों की वंदना आप यहाँ पर भी आँख बंद करके अपने श्रुत ज्ञान के माध्यम से अच्छे ढंग से कर सकोगे। करोगे तो लाभ आपको मिलेगा और आप लाभ लोगे तो थोड़ा बहुत लाभ हमको भी मिल जाएगा। कुछ लाभ हमको भी मिलेगा। अगर आप करोगे तो लाभ हमको भी मिलेगा। आप कम से कम इस तरीके के अकृत्रिम जिनालयों की अब सैर करना शुरू करो। अभी तक तो आपने ज्यादा से ज्यादा बस सम्मेदशिखर के कूटों पर वंदना करने का कभी भाव बना पाते हो। अब ये छहों कुलाचलों पर, सुमेरू पर्वत पर, गजदंत पर, इतने जम्बूद्वीप में घूमने के बाद जब आपका मन करें तो फिर ढाई द्वीप की यात्रा पर निकल जाना और फिर ढाई द्वीप के बाहर भी जाने का मन करें तो वहाँ तक चलते-चलते तेरहवें द्वीप तक पहुँच जाना, जिसका नाम है- रूचकवर द्वीप। इतनी रचना बड़ी सुहावनी अच्छी रचना है। यह ऐसी चीजें सबके मानस पटल पर अंकित होनी चाहिए जो ये जैन धर्म की विशेष मौलिक चीजें हैं, जो दुनिया में कहीं भी आपको सुनने-पढ़ने को नहीं मिलेगा। आज इतना ही पर्याप्त हैं।

—--